कत्थक नृत्यांगना ईला पाण्डेय जी के नृत्य के घरानों की पृष्ठभूमि

कुसम लता
पीएचडी शोधार्थी, संगोत विभाग, हिमाचल प्रदेश विश्वविद्यालय, शिमला

कला के प्रचार प्रसार में एक कलाकार की महत्वपूर्ण भूमिका होती है। कला पीढ़ी दर पीढ़ी प्रवाहित होती है। यह परम्परा हज़ारों वर्षों से चली आ रही है। लेकिन प्रकृति के अनुसार मानव का पंचतत्व से बना यह शरीर अंत में पंचतत्वों में विलीन हो जाता है। इसी प्रकार एक कलाकार भी इतिहास के गर्भ में विलीन हो जाता है। हमारे देश में असाधारण प्रतिभा सम्पन्न विद्वान कलाकार, संगीतज्ञों का जन्म हुआ है। किसी भी कलाकार व एक मनुष्य के जीवन में माता–पिता व गुरु का स्थान अतीव महत्वपूर्ण है। हम इन महान् कलाकारों की प्रतिभा सम्पन्नता के कारण ही संगीत से जुड़ी विभूतियों कें जीवन के महत्वपूर्ण पहलुओं को हम जान सकते हैं। इन्हीं महान् विभूतियों में एक नाम है ईला पाण्डेय जी। जो हिमाचल प्रदेश की प्रसिद्ध कत्थक नृत्यांगना है।[1]

''कला के हेतु कला होती है धन के हेतु कला नहीं होती'' इसका प्रत्यक्ष उदाहरण ईला पाण्डेय जी खुद हैं। ईल पाण्डेय जी ने खुद को संगीत कला की साधना के लिए पूर्णरू‍प से समर्पित किया है। साथ ही संगीत के क्षेत्र में अपना एक उच्च स्थान बनाया है। ईला पाण्डेय का मानना है गायन वादन व नृत्य के विद्यार्थी के लिए रियाज़ बहुत ज़रूरी है। ईला पाण्डेय जी ने नृत्य के तीनों घरानों की शिक्षा प्राप्त की है। उनका मानना है कि 'गुरू विन ज्ञान न आवत' अर्थात गुरू के विना अर्जित नहीं किया जाता। परम्परागत शिक्षण की व्यवस्था केवल भारतीय संगीत में दी है। संगीत की बात करें तो गुरू और शिष्य का सम्बन्ध ईश्वर और भक्त जितना ऊँचा है यदि देखा जाए तो इससे भी सर्वोपरि है। ईला पाण्डेय जी के अनुसार शिष्य गुरू का आईना होता है तथा गुरू शिष्य को हू व हू अपनी तरह ही देखना चाहता है। ईला पाण्डेय जी आज जिस स्थान पर है वह उनकी खुद की मेहनत ओर गुरूजनों के आर्शीवद का नजीता है। ईल पाण्डेय जी संगीत के प्रति निरन्तर अपनी सेवाएं दे रही हैं। संगीत के प्रचार प्रसार में ईला पाण्डेय जी एक अहम भूमिका अदा कर रही हैं।

कत्थक नृत्यांगना ईला पाण्डेय का जीवन परिचय

ईला पाण्डेय जी के परिवार का सम्बन्ध हिमाचल प्रदेश के सिरमौर रियासत से है। ईला पाण्डेय जी का जन्म 5 सितम्बर 1946 को हुआ था। आपके पिता जी का नाम डा० भगतराम जो सेना से रिटायर्ड कैप्टन थे। आपकी माताजी का नाम अन्नापूर्ण है

जो रेडियों की लोकप्रिय कलाकारा रहीं है। आपके पति डा० रमेश पाण्डये पंजाब यूनिवर्सिटी चण्डीगढ़ से रिटायर्ड प्रोफेसर हैं। पाण्डेय जी को बचपन से ही संगीत गायन, वादन एवं नृत्य से बहुत लगाव था। एक बार अम्बाला में एक कार्यक्रम के दौरान मंच पर नृत्य पेश किया जा रहा था। दर्शकों ने चार–पांच साल की बालिका भी शामिल थी जो अपने माता–पिता के साथ आई थी। वह अपनी पिता जी को गोद से उतरी और सीट के सामने थिरकने लगी। खास बात यह कि अधिकांश दर्शकों की निगाहें इस बच्ची पर थीं पर उसकी आँखें सामने नृत्यांगना पर। उसको आभास नहीं था कि आकर्षण का केन्द्र मंच पर नृत्यांगना नहीं अपितु वह हैं। प्रस्तुति समाप्त हुई तो दर्शकों ने नृत्यांगना के साथ–साथ बच्ची की प्रतिभा पर भी तालियां बजाई। बच्ची ने नृत्य सीखने की इच्छा जताई तो दर्शकों ने उसके पिता को सलाह दी कि प्रशिक्षण मिले तो वह वुलंदिया छू सकती है। पिता ने कार्यक्रम के आयोजकों से बात की तो एक कलाकार ने परखने के लिए बच्ची के समाने नृत्य की कुछ मुद्राएं पेश की तो वह हुवहु कर दिखाया। बस फिर क्या था ट्रेनिंग शुरू हो गई। समय के साथ–साथ वह अपनी प्रतिभा का लोहा मनवाने लगीं। उन्होंने जहां भी प्रस्तुति दी, अपनी प्रतिभा के बलबूते पर लोगों के दिलों की धड़कन बन गई। यह छोटी बच्ची कोई और नहीं बल्कि मशहूर कत्थक नृत्यांगना ईला पाण्डेय जी है। इनका विवाह डॉ० रमेश पाण्डेय तो पंजाब विश्वविद्यालय चण्डीगढ़ के रिटायर्ड प्रोफेसर हैं। आपके बेटे रजत पाण्डेय चण्डीगढ़ अर्थशास्त्र विभाग के एक मशहूर संस्थान में मार्केटिंग सैक्शन के अच्छे पद पर हैं। ईला जी के परिवार ने इनके इस सफर में हर संभव सहयोग दिया।[2]

ईला जी की स्कूल की शिक्षा देहरादून में हुई। इंटरमिडिएट उन्होंने नारी शिल्प मन्दिर से की। तथा ईला जी ने नृत्य का सफर श्रीकृष्ण कला मन्दिर से प्रारम्भ हुआ। देहरादून में स्थित कृष्ण कला मंदिर में ईला पाण्डेय जी गुरु प्रमुख शंकर झा से नृत्य सीखने का अवसर प्राप्त हुआ। मंदिर के 'पुरोहित' शंकर झा जो कि वहां के गुरु प्रमुख ने अनेक नृत्य करती बन सकती है। उन दिनों डॉ० 'शैलजा' को 'कामयानी' की पटकथा तैयार करने की धुन समाई हुई थी और उस दृष्टि से नृत्यांगनाओं के बारे में सोचते रहते थे। तभी शंकर झा साहब ने नाम बताया था ईला क्षेत्री। नृत्य शिक्षा का यह सफर इसी तरह चलता रहा।

इसके अतिरिक्त ईला जी ने गायन की शिक्षा गुरु राजा राम कम्बोज तथा प्रो० सोमदत्त वटू जी से गायन की शिक्षा प्राप्त की। गायन के साथ ईला जी ने तबला वादन की शिक्षा मामा वीर सिंह रावत तथा उस्ताद अज़ीजुद्दीन (जीजू उस्ताद) से प्राप्त की। इसके अतिरिक्त सितार वादन की शिक्षा पं० सीता राम चैटर्जी द्वारा मिली

जो अंग्रेजी साहित्य और समाजशास्त्र के भी विद्वान थे। नृत्य की शिक्षा बाद में ईला जी ने मुम्बई के चौबे जी महाराज से नृत्य शिक्षा से प्राप्त की। ईला पाण्डेय जी ने 1966 में मुज्जफरनगर में स्व० पण्डित विशन लाल मिश्रा जी से जयपुर घराने की नृत्य शिक्षा प्राप्त की। ईला पाण्डेय जी नृत्य में 'प्रवीण' तथा गायन में 'संगीत प्रभाकर' की उपाधि प्राप्त की है। यह सब उपाधियां उनकी नृत्य औ संगीत के प्रति उनकी लगन, अनवरत साधना और कठोर परिश्रमण का परिणाम है।

उनके सीखे गए नृत्य के तीनों घरानों 1) जयपुर घराना 2)लखनऊ घराना 3) वनारस घराना, इनका वर्णन इस प्रकार है–

जयपुर घराना

हिन्दू राजदरवारों में कथक के जिस स्वरूप का विकास हुआ उस शैली को जयपुर घराने का नाम दिया गया है। राजस्थान के कोने–कोने में कत्थक कलाकार बसते हैं वैसे तो वीाकनेर, जोधपुर, उदयपुर के राजाओं ने भी समय–समय पर कलाकारों को संरक्षण दिया, किन्तु जयपुर राज्य में संगीत एवं नृत्य की सरस अविरल धारा प्रवाहित होती रही। यहां के राजाओं ने संगीत एवं नृत्य के श्रृंगारिक पक्ष के साथ–साथ शास्त्रीय पक्ष में भक्ति पक्ष को भी महत्व दिया। महाराज सवाई जयसिंह ने जयपुर में विभिन्न विधाओं के लिए कई कारखाने स्थापित किए। जिनमें एक गुणी जन खाना भी था।[3] कहा जता है कि जयपुर घराने के प्रथम नर्तक भानू जी थे। इनका निवास स्थान गांव गोपाल पुरा (ज़िला चुरू) था। वह शिवभक्त थे। ये भी कहा जाता है कि उन्होंने शिव ताण्डव एक सन्त महात्मा से सीखा था। वाद में बहुत खोजने पर भी उस सन्त महात्मा का कोई पता न चला कि वह कहां चले गए। जाते–जाते उन्होंने वरदान दिया कि इस नृत्य विधा का प्रचार तुम्हारे परिवार को प्रसिद्धि प्रदान करेगा। तत्पश्चात् भानू जी महात्मन जी के द्वारा दी गई नृत्य शिक्षा में संलग्न हो गए। भानू जी आज से पांच पीढ़ियां पहले हुए थे। और पूरे जयपुर नगर में उन्हें बहुत सम्मान की दृष्टि से देखा जाता था।

भानू जी महाराज के एक पुत्र हुआ जिसका नाम मालू रखा गया। भानू जी ने अपने शिव ताण्डव की शिक्षा मालू को सिखा दी मालू जी अपने पिता जी के साथ गांव–गांव जाकर जीविका अर्जित करने के लिए मन्दिरों में जाने लगे। मालू जी का विवाह हो गया। इसके उपरान्त उनके घर लालू जी, मोती जी तथा काहन जी नामक तीन पुत्र हुए। इन तीनों ने अपने पिता जी से नृत्य की शिक्षा ली। लालू जी के गोपाल जी नामक पुत्र हुआ। काहन जी के गीघा जी तथा सहजा जी नामक दो पुत्र हुए। गीघा जी के पांच पुत्र हुए। पूरन जी, नाथू जी, मीमा जी, रामू जी, दूल्हा जी। इन पांचों के

केवल दूल्हा जी जयपुर आकर बसे। गापेाल जी के यहां शंकर लाल, शिवलाल, बद्रीप्रसाद नामक पुत्र हुआ और समय रहते उनके बैजनाथ प्रसाद पुत्र हुआ। गोपाल जी के दूसरे शिवलाल जी की कोई सन्तान नही हुई। गोपाल जी के चौथे पुत्र लक्ष्मण प्रसाद जी के किशन लाल नामक पुत्र हुआ और किशन लाल जी के पुष्कर राजू और गोकुल चन्द नामक पुत्र आज अपने क्षेत्र में ख्याति प्राप्त कर रहे हैं।

जयपुर घराने की विशेषताएं

- वीर रस प्रधान
- भक्तिभाव से ओत–प्रोत
- लयकारी
- ताल प्रधान
- पौराणिक गाथाओं से प्रभावित
- बोलों की विविधता
- कविता की प्रस्तुति
- कत्थक का तकनीकी अंग
- भ्रमणी का प्रयोग
- पदाघात।[4]

लखनऊ घराना

मुगल शासकों के दरबार में कत्थक नृत्य के जिस स्वरूप का विकास हुआ सामान्य तौर पर उसी स्वरूप को कत्थक में लखनऊ घराने के नाम से जाना जाता है। इतिहास में बादशाह अकबर से लेकर अंतिम मुगल शासक तक कत्थक नृत्य के विकास के उदाहरण तथा इसको आश्रय देने के उदाहरण प्राप्त होते हैं। किन्तु नवाव वाजिद अली शाह के समान गुणग्राही एवं कलानुरागी कोई भी नहीं हुआ। लखनऊ घराने का उदाय नबाव आसुफुद्दौला के जमाने में हुआ। श्री ईश्वरी प्रसाद जी को लखनऊ घराने के जन्मदाता के रूप में माना जाता है। वर्तमान में लखनऊ घराने के प्रतिनिधि कलाकार श्री बिरजू महाराज ईश्वरी प्रसाद जी की सांतवी पीढ़ी है। श्री ईश्वरी प्रसाद जी के उडगू जी तथा खड़गू जी तथ तुलाराम जी नामक तीन पुत्र हुए। श्री ईश्वरी जी ने अपने तीनों पुत्रों को विधिवत नृत्य की शिक्षा दी।

श्री ईश्वरी जी की मृत्यु 105 वर्ष की आयु में सापं के काटने से नागपंचमी के दिन हुई और कहा जाता है कि उनकी पत्नी भी साथ में ही सती हो गई। पांच पीढ़ियों तक

नागपंचमी का त्यौहार बन्द रहा। श्री शम्भू महाराज के यहां नागपंचमी के दिन श्रीकृष्ण मोहन का जन्म हुआ। छठी पीढ़ी में आकर यह त्यौहार मनाया जाने लगा। ईश्वरी जी की मृत्यु के बाद तुलाराम जी ने वैराग्य ले लिया। खड़गू जी ने नृत्य किया ही नहीं। अडगू जी के जीन पुत्र प्रकाश जी, दयाल जी, हीरालाल जी को नृत्य की शिक्षा दी। बाद में प्रकाश जी अपने भाइयों को लेकर लखनऊ चले गए। लखनऊ मे उस समय आसफुद्दौला का राज्य था। प्रकाश जी वहां राजनर्तक नियुक्त हुए और यहीं से नटवरी समाप्त हुआ और कत्थक का प्रचार प्रारम्भ हुआ। प्रकाश जी के तीन पुत्र दुर्गा प्रसाद, ठाकुर प्रसाद जी तथा मानसिंह जी को नृत्य शिक्षा दी। दुर्गा प्रसाद जी के तीन पुत्र हुए जिनके नाम विन्दादीन, कालका प्रसाद तथा भैरव प्रसाद थे। विन्दादीन एक अच्छे नर्तक ही नही एक अच्छे संगीतकार भी थे। कालका जी का लय ताल पर पूर्ण अधिकार था। लखनऊ घराने को प्रतिष्ठा दिलाने में विन्दादीन जी और कालका प्रसाद जी का महत्वपूर्ण योगदान है। विन्दादीन जी कृष्ण भक्त थे तथा उन्होंने विवाह नहीं किया। कालका प्रसाद जी का विवाह जगदेई से हुआ तथा उनके तीन पुत्र अच्छन महाराज, लच्छू महाराज तथा तीसरे शम्भू महाराज हुए। लखनऊ घराने को वर्तमान रूप में लाने का श्रेय नवाव खादतखां को जाता है। उस शासन काल में बहुत से कत्थक परिवार थे। उन्हीं मं से हंड़िया गांव के ईश्वरी प्रसाद जी उत्पन्न हुए और और वर्तमान समय मे विरजू महाराज हैं। जिन्होंने अपने घरानें कें नृत्य को आज अन्तर्राष्ट्रीय स्तर तक पहुँचा दिया है।

विशेषताएं

- इस घराने का विकास मुस्लिम प्रभाव में हुआ अतः इस शैली में नज़ाकत व खूबसूरती पर बल दिया।
- छोटी–छोटी वंदिशों पर नृत्य करना इस घराने की विशेषता है।
- इस घराने में ठाठ का प्रस्तुततिकरण एक विशेष अन्दाज़ में किया जाता है।
- नटवरी नृत्य के नाम से कत्थक को प्रसिद्ध करने का श्रेय इसी घराने को जाता है।
- लखनऊ घराने का नृत्य लास्य प्रधान नृत्य है। मुरली घूंघट बनाने की परम्परा भी इस घराने में है।[5]

बनारस घराना

कत्थक नृत्य जगत में आज बनारस घराने का महत्वपूर्ण स्थान है।बनारस घराने के संस्थापक जानकी प्रसाद थे। जानकी प्रसाद यद्यपि राजस्थान के निवासी थे परन्तु

उन्होंने अपने जीवन की साधना बनारस में की। वहीं रहकर नृत्य शैली का प्रचार किया।

ईला पाण्डेय जी द्वारा सीखे गए कत्थक नृत्य के बनारस घराने की पृष्ठभूमि

बनारस घराना

कत्थक नृत्य जगत में आज बनारस घराने का महत्वपूर्ण स्थान है। बनारस घराने के संस्थापक जानकी प्रसाद थे। जानकी प्रसाद जी यद्यपि राजस्थान के मूल निवासी थे। पर उन्होंने अपने जीवन की साधना बनारस में की। वहीं रहकर उन्होंने अपनी नृत्य शैली का प्रचार प्रसार किया। उन्होंने अपने जीवन काल में सैंकड़ों शिष्य बनाए, जो उनकी नृत्यशैली को लेकर धीरे–धीरे सारे देश में फैल गए। बनारस घराने कें शिष्यों में हिन्दू और मुसलमान दोनों ही वर्गों कें शिष्य थे। जानकी प्रसाद जी का जन्म महाराज वीकानेर के राज्य नर्तक साँवल दास जी (श्यामल दास) के वंश में हुआ था। उनके पूर्वज चुरू जनपमद के मेलसूर गांव के निवासी थे। सांवलदास नर्तक होने के साथ–साथ एक उच्चकोटि के संगीतकार भी थे। वह वैदिक छन्दों पर नृत्य किया करते थे। दूर–दूर के राजा महाराजा उनका नृत्य देखने आया करते थे। जानकी प्रसाद बहुत ही प्रतिभा सम्पन्न थे। वह या तो नृत्य अभ्यास करते या पूजा अर्चना में लगे रहते थे। आठ वर्ष की आयु में खड़ी तलवारों की धार पर नृत्य किया था। महाराज रत्नसिंह जी की कृपा से वह संस्कृत की शिक्षा भी ले रहे थे तथा गोस्वामी जी से वृजभाषा की शिक्षा लेने लगे। जानकी प्रसाद जी संस्कृत, व्रजभाषा तथा नृत्य के परम ज्ञाता थे। उन्होंने ऐसे नृत्य की रचना की जो भगवान् श्रीकृष्णरास में नाचा करते थे। नटवर के नृत्य के बोलों को उन्होंने नटवरी बोल नाम दिया और उन बोलों को ऐसा गणित बनाया कि कत्थक नृत्य का पूरा स्वरूप बदल गया। जानकी प्रसाद जी ने जीवन भर ब्राह्मवर्य का पालन किया। उनके पास अयोध्या, चित्रकूट, प्रयाग लखनऊ तथा विहार से बहुत से शिष्य शिक्षा लेने आने लगे। जानकी प्रसाद जी दो भाई थे। उनके बड़े भाई चुन्नी लाल जी थे। चुन्नी लाल जी के पुत्र सबला जी हुए। सबला जी ने जानकी प्रसाद जी से ही नृत्यशिक्षा ली तथा अपने पुत्र दूदा जी को भी बचपन से ही शिक्षा के लिए काशी भेज दिया। दूदा जी के हुकुमा जी और मोती जी दो पुत्र हुए। इन्होनें भी अपनी दादा जी जानकी प्रसाद जी से उनक ऐसे गुण सीख लिए कि मोती लाल जी लगातार 12 घण्टे नृत्य किया। मोती लाल जी भी अपने दादा जी की तरह भक्त साधक थे। उनकी कोई सन्तान नहीं थी। इला राम जी बनारस जाया करते थे। तथा उनका नृत्य देखकर विहार के महाराज अपने साथ विहार ले गए। दूला राम जी के दूसरे भाई गणेश जी लाल बीकानेर के महाराज डूंगर सिंह जी के दरबार में राजनर्तक रहे।[6]

बनारस घराने की विशेषताएं

- इस नृत्य शैली में भक्ति रस की प्रधानता दृष्टिगोचर होती है।
- इस घराने में नृत्यांगी बोलों पर नृत्य किया जाता है। तबले, परवावज के बोलों को बहुत ही कम प्रयोग होता है।
- इस घराने में ततकार के बोलों का अभ्यास करते समय शरीर का कोई भी अंग ने हिले इस बात का विशेष ध्यान रखा जाता है। एढ़ी का प्रयोग अधिक किया जाता है।
- इस घराने में तोड़े, टुकड़े, परणें, कवित सभी की प्रस्तुति की जाती है। ठाठ करने का एक विशेष अन्दाज है।
- भावाभिव्यक्ति हेतु कविता, पद, भजन, ठुमरी आदि का प्रयोग होता है जिसमें भक्तिभाव के अलावा सामाजिक दर्शन से संबंधित प्रसंगों पर कुशलता से अभिनय किया जाता है।[7]

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

के वासुदेव शास्त्री, संगीतशास्त्र, हिन्दी समिति ग्रन्थमाला, प्रकाशन, सूचना विभाग, उत्तर प्रदेश लखनऊ

चेतन सिंह खडका, उतराखण्ड लाईव, अप्रैल 2012, प्रकाशन– दरिया यूंटी मासिका पत्रिका चण्डीगढ़।

कत्थक प्राचीन नृतांग, लेखिका श्रीमति, गीतारघुवीर, प्रकाशन– जयपुर पृ० 19

कत्थक नृत्य शिक्षा, लेखक डॉ० पुरूदाधीच, प्रकाशन–बिन्दु प्रकाशन, उज्जैन (म०प्र०)

कत्थक के प्राचीन नृतांग, लेखिका गीता रघुवीर, प्रकाशन पब्लिकेशन स्कीम, जयपुर

ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य में कत्थक नृत्य, लेखिका–माया ठाक, प्रकाशन नई दिल्ली पृ० सं. 157

कत्थक के प्राचीन नृतांग, लेखिका–गीता रघुवीर, प्रकाशन–जयपुर पृं०सं० 35